ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-6* July- 2020
Innovation The Research Concept

नशा : एक अभिशाप

Drug Addiction: A Curse

Paper Submission: 12/07/2020, Date of Acceptance: 20/07/2020, Date of Publication: 21/07/2020

तेज कुमार
शोधार्थी,
समाजशास्त्र विभाग,
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान भारत

सारांश

नशा एक अभिशाप है यह एक ऐसी बुराई है जिससे इंसान का अनमोल जीवन समय से पहले ही मौत का शिकार हो जाता है नशा नाश की जड़ है। नशा हर बुराई की जड़ है जहरीले और नशीले पदार्थ के सेवन से व्यक्ति को शारीरिक मानसिक और आर्थिक हानि पहुंचाने के साथ ही इससे सामाजिक वातावरण भी प्रदूषित होता है साथ ही स्वयं और परिवार की सामाजिक स्थिति को भी भारी नुकसान पहुंचाता है नशे के आदी व्यक्ति को समाज में हेय ही दृष्टि से देखा जाता है और वह परिवार के लिए वह बोझ स्वरूप बन जाता है। समाज व राष्ट्र के लिए उपादेयता शून्य हो जाती है नशे से अपराध की ओर अग्रसर होता है सभी के लिए अभिशाप बन जाता है नशा अंतराष्ट्रीय विकराल समस्या है स्कूल जाने वाले बच्चों से लेकर युवा, बुजुर्गों और महिलाओं तक फैल फैल चुकी है धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है नशा इंसान को कर्जदार बना देता है।

Intoxication is a curse. It is an evil that makes a person's precious life fall prematurely to death. Drugs are the root of destruction. Intoxication is the root of every evil; poisonous and intoxicating substances cause physical mental and economic harm to a person, as well as pollute the social environment as well as the social status of oneself and family. It also hurts the addict. It is looked upon in society and it becomes a burden for the family. Usefulness becomes zero for society and nation; Drug leads to crime becomes a curse for everyone. Drug addiction is an international problem. From school going children to youth, elderly and women, smoking has spread to health. Addiction is harmful, makes a person indebted.

मुख्य शब्द : नशा, अभिशाप, जीवन, मौत, शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, परिवार, सामाजिक स्थिति, हेय, राष्ट्र, स्वास्थ्य, बच्चे, कर्जदार।
Drugs, Curse, Life, Death, Physical, Mental, Economic, Family, Social Status, Hey, Nation, Health, Children, Debtors.

प्रस्तावना

इतिहास गवाह है कि युवाओं ने हमेशा अपनी सकार सोच ऊर्जा और ललक से समाज और देश में व्यापक सकारात्मक बदलाव लाए हैं। तरक्की और खुशहाली की राह अब और आसान हो जाती है जब युवा सेहतमंद और ऊर्जावान हो लेकिन आज हमारे सामने एक सबसे बड़ी सामाजिक समस्या पैदा हो रही है

युवाओं के नशे का शिकार होना जो कल के होने वाले देश के जवान कणधार है आज वही सबसे ज्यादा नशे के शिकार है जिनको देश की उन्नति में अपनी उर्जा लगानी चाहिए वह आज अपनी अनमोल शारीरिक और मानसिक ऊर्जा चोरी लूटपाट और मर्डर जैसी सामाजिक कुरीतियों में नष्ट कर रहे हैं जिस तरह से टेक्नोलॉजी विकसित हुई है उसी तरह से नशे के सेवन की भी टेक्नोलॉजी विकसित हुई है।

आज का युवा शराब, गांजा, भांग, गुटखा, स्मैक, कोकीन, ब्राडन शुगर की जगह घातक मादक दवाओं का प्रयोग करता है इस जहरीले पदार्थों के सेवन से व्यक्तियों को शारीरिक मानसिक और आर्थिक हानि पहुंचाने के साथ ही समाज में हेय की दृष्टि से देखा जाता है नशा करने से व्यक्ति परिवार के लिए बोझ स्वरूप बन जाता है उसकी समाज के लिए उपादेयता शून्य हो जाती है वह नशे से अपराध की ओर अग्रसर हो जाता है तथा शांतिपूर्ण समाज के लिए अभिशाप बन जाता है नशा एक अंतराष्ट्रीय विकराल समस्या बनकर इस द्रुवयसन से आज स्कूली छोटे छोटे बच्चों से लेकर युवा बुजुर्ग और विशेष

विशेषतोर से महिलाएं भी बुरी तरह प्रभावित है अभिशाप से समय पहले मुक्ति पा लेने से ही समाज की समाज की भय है जो इसके चंगुल में फंस गया वह स्वयं तो बर्बाद होता है इसके साथ ही उसका परिवार भी बर्बाद हो जाता है युवा वर्ग का कैरियर नशे से ही चौपट हो रहा है इससे सामाजिक वातावरण खराब होता है युवा धूम्रपान फैशन के चक्कर में करने में फिर आदि हो जाते हैं इन सभी मादक पदार्थों का सेवन करने से किसी भी स्थिति में किसी भी सभ्य समाज के लिए वर्जनीय होना चाहिए समाज में पनप रहे विभिन्न प्रकार के अपराध का एक मुख्य कारण नशा है नशे की प्रवृत्ति में वृद्धि के साथ साथ अपराधियों की संख्या में भी वृद्धि होती है नशा एक प्रकार से शरीर को भारी नुकसान पहुंचाता है इसके सेवन से व्यक्ति तथा सुप्तावस्था में हो जाता है यह शरीर की समस्त बीमारियों की जड़ है इससे देश का विकास अवरुद्ध और विनाश हीन हो रहा है किसी भी देश का विकास उसके नागरिकों के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। नशा एक ऐसी आदत है जो व्यक्ति के तन मन और धन से खोखला कर देती है इस बुराई को दूर करने के लिए शासन के साथ समाज के हर सबको को आगे आना होगा यह कैसी विडंबना है कि सामाजिक हितों से संबंधित तमाम मुद्दों व उससे जुड़े नकारात्मक प्रभावों पर हमारी सरकारें व सामाजिक संगठन बहुत जोर शोर से आवाज उठाते हुए कुछ मामलों पर आंदोलन तक छेड़ देते हैं परंतु आधे दिन इस तरह की होने वाली घटनाओं पर कभी भी कोई सामाजिक संगठन या राजनीतिक ना आवाज उठाते हैं और न ही गंभीर समस्या के निदान की वृद्धि स्तर पर कोई पहल करते हैं कुछ जागरूक और जिम्मेदार नागरिक स्थानीय स्तर पर कहीं–कहीं कुछ थोड़े प्रयास जरूर करते रहते हैं लेकिन वे इस बुराई को जड़ से मिटाने में कभी भी पूर्ण समर्थ नहीं हो पाते।

अध्ययन क्षेत्र

राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले की सूरतगढ़ पंचायत समिति है जो गंगा नगर से दक्षिण दिशा में 70 किलोमीटर दूर तथा बीकानेर से 170 किलोमीटर उत्तर पूर्व में बसा हुआ है।

समस्या अभिकथन

शिक्षा और इन्सानो को जागरूक किये बिना समस्त देश को नशा मुक्त करना संभव नहीं है इस लिए सभी को प्रशासन सरकार स्वयं से की संस्था शिक्षित तथा समस्त नागरिकों के सांझा प्रयास करने से ही यह सम्भव है जब ये लोग नशेड़ियों की अंर्तरात्मा को नहीं जगा पायेंगे तब तक नशा प्रकति बंद नहीं होगी उनको यह बताना होगा कि कुछ पल का नशा सारी जिंदगी की सजा ।

अध्ययन विधि

अध्ययन को पूरा करने के साक्षात्कार अनुसूची विधि प्रयोग की गई।

अध्ययन के उद्देश्य

1. देश को नशा मुक्त बनाने में सरकार की क्या भूमिका है।
2. क्या समाज मे नशेड़ी और आमजन को बराबर की तवज्जे जाती है
3. क्या आज की शिक्षा पद्धति नशा मुक्त भारत की प्रवृत्ति बढ़ावा दे रही है ।
4. क्या नशा प्रवृत्ति से ही अपराध में वृद्धि हो रही है
5. वर्तमान समय में महिला और पुरुषों में नशा प्रवृत्ति मे कोई अन्त।
6. क्या नशा मुक्ति के लिए राष्ट्रीय या अंतराष्ट्रीय स्तर पर के उपाय खोजा गया है
7. क्या व्यक्ति द्वारा नशा करने के कारणों का पता लगाया गया है।

शोध परिकल्पनाएं

1. देश को नशा मुक्त बनाने के लिए सरव ने महत्व भूमिका निभाई है।
2. समाज में देश में नशा प्रवृत्ति को रोकने के लिए समाज सेवी संस्था और सरकार की कोई अहम भूमिका रही है।
3. आज की शिक्षा पद्धति नशा मुक्त भारत का निर्माण कर रही है।
4. नशा प्रवृत्ति से हो रहे अपराधों की वृद्धि में सरकार रोकथाम के उपाय कर रही है।
5. समाजसेवी संस्थाओं,जागरूक लोगों का नशा प्रवृत्ति त्यागने के लिए नशेड़ियों को जागरूक करने में योगदान रहा है।

निष्कर्ष

आज के आधुनिक युग में लोग नशा करने केआदि होते जा रहे हैं ।नशे ने हमारे पूरे देश को घेर लिया है और लोगों की जिंदगी में अंधकार कर दिया है।

ज्यादातर नशे का सेवन युवाओं में देखा जाता है क्योंकि वह विदेशी संस्कृति को अपनाना चाहते हैं वह नशा करने को फैशन समझते हैं और गर्व महसूस करते हैं नशे की वजह से देश के युवा अंधकार में है और पूरे देश का भविष्य भी सुरक्षित नहीं है।

नशा करने वाला व्यक्ति मान सम्मान सब कुछ खो देता है वह अपनी पारिवारिक सामाजिक और आर्थिक स्थिति को खराब कर लेता है नशे की लत में पढ़कर लोग पहले धन देकर नशीले पदार्थ खरीदते हैं और बाद में घर के समान बेचने लगते है। नशे की लत में पड़ा हुआ मनुष्य अस्थाई रूप से असंवेदनशील हो जाता है। नशे की लत के चलते लोग बहुत से अपराधों को अंजाम देते हैं। नशा बहुत सी गंभीर बीमारियों को जन्म देता है। इसकी वजह से व्यक्ति शारीरिक रूप से कमजोर पड़ जाता है। और गंभीर बीमारियों का शिकार हो जाता है। लोगों को नशे से मुक्त करना और देश के भविष्य के लिए बहुत जरूरी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *श्रीवास्तव, सुधारानी (1999), 'भारत में महिलाओं की वैधानिकता कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स' नई दिल्ली।*
2. *बघेला, डॉ. हेत सिंह(1999) शिक्षा मनोविज्ञान विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।*
3. *सक्सेना, ए. की. (1972) 'एनवायरनमेंटल एजुकेशन' भार्गव पुस्तक हाउस आगरा।*
4. *मिश्रा के. के. (1965) 'विकास का समाजशास्त्र' वैशाली प्रकाशन गोरखपुर।*
5. *मुकर्जी रविंद्रनाथ,(1974) 'सामाजिक सवेक्षण व शोध', सरस्वती साहित्य दिल्ली।*
6. *चोपड़ा सरोज बाला, भारत में स्थानीय प्रशासन, राजस्थान ग्रंथ अकादमी जयपुर (1993)।*
7. *महात्मा गांधी, ग्राम स्वराज, नवजीवन, प्रकाशन अहमदाबाद ।*